International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-02-2022, Accepted: 13-03-2022, Published: 28-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 48-50

वाल्मीकि रामायण में वर्णित सैन्य व्यवस्था

आशीष कुमार बिठौरे
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
रामायण आदिकवि वाल्मीकि द्वारा लिखा गया संस्कृत का एक अनुपम महाकाव्य हैं, इसमें 24000 श्लोक हैं। यह हिन्दू स्मृति का एक ऐसा महाकाव्य रूपी अंग है, जिसके माध्यम से रघुकुल के राजा राम के पुरूषार्थ व प्रतिबद्धता की कहानी कहीं गई है। इसमें सात अध्याय है जो कि काण्ड के नाम से जाने जाते हैं, बाल काण्ड, अयोध्या काण्ड, अरण्य काण्ड, किष्किंधा काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड तथा उत्तरा काण्ड।
रामायण को चतुर्विंशित एवं सहस्त्री–संहिता के नाम से भी जाना जाता है, इसके काल निर्धारण में विद्वानों के अनेक मतभेद है फिर भी अनुमानतः कहाँ जा सकता है की रामायण की रचना उस समय हुई जब काव्य शास्त्री लक्षण ग्रंथों का सर्वथा आभाव था।
हम इसकी सर्वांगीणता का अनुमान इस बात से लगा सकते है, कि संस्कृत साहित्य में लगभग सभी प्रमुख कवियों ने रामकथा को अपना उपजीव्य बनाया। रामायण उस संधिकाल की रचना है, जब वैदिक आर्य लौकिकता की और अग्रसर हो रहे थे। वैसे तो रामायण मानव जीवन का सर्वांगीण आदर्श प्रस्तुत करती है, किन्तु राजनीतिक दृष्टि से प्रकाश डाला जाये तो यह राजा के कर्तव्य और अधिकार, राजा–प्रजा सम्बन्ध, नागरिकता, उत्तराधिकार–विधान, शत्रु संहार, पाप–विनाशन, सैन्य संचालन आदि विषयों पर प्रकाश डालता हैं।

मूल शब्दः वाल्मीकि रामायण–सैन्य व्यवस्था युद्ध

प्रस्तावना
इसी के आधार पर यह शोध–पत्र वाल्मीकि रामायण में वर्णित युद्ध काण्ड (युद्ध व्यवस्था) सैन्य व्यवस्था पर विस्तृत प्रकाश डालता है। वाल्मीकि रामायण में सैन्य व्यवस्था सुसंगठित और चारों बलों से समृद्ध थी। युद्ध के विषय में आदिकवि वाल्मीकि कहते है कि युद्ध का खतरा तभी उठाना चाहिए जब कोई विकल्प न रह जाये। इसी आधार पर हम वाल्मीकि रामायण के अध्ययन के दौरान देखते है कि वाल्मीकि रामायण में 'बल' को राज्य के सप्तांगों में से एक महत्पूर्ण अंग माना गया।
बौद्धिक दृष्टि से विकसित होने पर भी व्यक्ति की अनौचित्यपूर्ण इच्छायें एवं स्वार्थ युद्ध करने के लिए प्रेरित करती हैं। अतः ''बल'' राज्य के सप्तांगों का एक अंग है। राज्य की सुरक्षा के लिये सैनिक की आवश्यकता होती है, अतः इन अनौचित्य पूर्ण कार्यों को रोकने के लिए एवं उनके प्रतिकार के लिए प्रत्येक राज्य को एक सुसंगठित सेना की आवश्कता होती है। रामायण में वर्णित सभी राज्य, समृद्ध, समतुल्य और विकसित थे, लेकिन सत्ताधारी राजाओं में अनौचित्य पूर्ण इच्छा और स्वार्थ की कामना थी। अतः ऐसे राजाओं के अनौचित्य पूर्ण, कार्यों से उनके प्रतिकार के लिए स्वराज्य की रक्षार्थ हेतु प्रत्येक राज्य में एक सैनिक संगठन था।
रामायण के अनुसार साम, दाम और भेद से कार्य सिद्ध न होने पर उसकी सिद्धि के लिए दण्ड या बल का प्रयोग आवश्यक था। सैनिक संगठन प्रधानतः बाह्य भात्रुओं से राज्य की रक्षार्थ होता था। लेकिन समय–समय पर राज्य में आन्तरिक भांति एवं सुरक्षा को बनाये रखने के लिये भी सेना की आवश्यकता पड़ती थी।
रामायण में सैनिक संगठन युद्ध प्रणाली, उसके नियम आदि का विस्तृत वर्णन है। रामायण में प्रमुख रूप से अयोध्या, किष्किन्धा, और लंका के सैनिक संगठन के विषय में विस्तृत विवेचना हैं, भीष्म के अनुसार सैन्य बल के 8 अंग माने गये हैं। रथारोही, गजारोही, अश्वारोही, नौकारोही, पैदल, विशिष्ट गुप्तचर, रामायण में इन सभी बलों का उल्लेख किया गया है। रामायण कालीन राज्यों में सेना का संगठन प्रमुख रूप से चर्तुरंग, दूत, गुप्तचर, शिविर, तथा मार्ग निदेशक से मिलकर हुआ है।
सेना दो प्रकार की है– स्वगम तथा अन्यगम। रामायण में सेना के दोनों स्वगम–पैदल सेना जैसे राम की सैना तथा अन्यगम (गजाव रथ आदि पर) जैसे रावण की सेना। रामायण के अध्ययन मे स्पष्ट है कि सेना का प्रधान संचालक एंव निर्देशक स्वयं राजा होता था। राजगण सैनिक शिक्षा प्राप्त होते थे। राम ने सैनिक शिक्षा प्राप्त की थी। राम ने अस्त्र–शस्त्र और सैनिक संचालन की कला तथा राजनीतिक ज्ञान आचार्य सुधन्वा से प्राप्त किया था। अतेव उन्हें अतिरथी कहा गया। इसी प्रकार सुग्रीव भी रण विशारद था। रावण भी सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त था। वह अस्त्र विधा विशारद, अश्वगज, और रथ पर सवार होने में दक्ष आदि की राजनीतिक में कुशल थे। राम और रावण द्वारा सैनिकों को संगठित एवं व्यवस्थित करना एवं मोर्चे पर स्थापित व संचालन एवं निर्देशन उनकी दक्षता का प्रतीक है।
रामायण मे मन्त्री, पुरोहित, सेनापति और शिविर नियन्ता का नाम एक साथ आया है। अतः राजा के अतिरिक्त इन सभी का एवं युवराज का भी हाथ सैनिक संगठन के कार्य में था। वस्तुतः राजा ही सैनिक शक्ति का प्रधान उसका संचालन

तथा निर्देशन करता था। राम, रावण, एवं सुग्रीव अपनी सेना के प्रधान नियन्ता एवं संचालक के रूप में रामायण में वर्णित है।

रामायणनुसार सेनापति सेना का नेता तथा मंत्री परिशद का सदस्य होता था। इसकी नियुक्ति राजा स्वयं करता था। रामायण में सेनाध्यक्ष के लिये सेनापति वाहिनी पति, चमूपति, सैन्यपाल का प्रयोग है। प्रधान सेनाध्यक्ष के अधीन अनेक बलमुख्य या बालाध्यक्ष एवं युप होते थे। रावण के राज्य में सभा के सभी मुख्य सदस्य बलाध्यक्ष होते थे। प्रहर्स्त राज रावण की सेना का प्रधान सेनाध्यक्ष तथा युद्ध मंत्री था। राजा दशादथ के आमात्य की दृढ़ विक्रम होने के नाते बलाध्यक्ष होगे। राजा सुग्रीव के सभी मंत्री यूथपति थे। वानर सेना का प्रधान सेनापति नील था। यूथपतियों के उपर यूथ पयूथप थे। त्रट क्षेत्रों की सेना का प्रधान सेनापति जाम्वन्त को महायूथ कहा गया है।

रामायाण के अनुसार सेनापति व्यवहार कुशल शूरवीर, बुद्धिमान, धैर्यमान, स्वामी का विश्वास सत्कुलोद भव, स्वामिभक्त और कार्यकुशल होते थे। सेनाध्यक्ष अपनी शुरता, बुद्धिमान, कुलीनता, स्वामीभक्ति एवं कार्यकुशलता के आधार पर राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था।

इस प्रकार श्रेष्ठ गुणों एवं कर्त्तव्य परायणता के आधार पर ही सेनाध्यक्ष चुने जाते थे। रामायण में सेना के लिए बल, वाहिनी, अनिकी, सेना, चमू आदि का प्रयोग है। रामायणनुसार सेना सैनिकों के सामर्थ एवं योग्यता के आधार पर चार अंगों –पैदल, अश्वारोहियों गजारोहियों एवं रथारोहियों में विभाजित थी। यह चतुरंगबल कहलाती थी। रावण की सेना में अश्वरोहियों और गजारोहियों के अतिरिक्त गधों और ऊँटों पर सवार होकर युद्ध करने वाले सैनिकों को भी सम्मिलित किया गया है। त्रिशिरा राक्षस वृषभ पर सवार होकर युद्ध भूमि में युद्ध के लिए गया था। रामायण में अश्वारोही और गजारोहीयों का नाम मात्र का ही उल्लेख है कृति में पैदल और रथारोहियों के युद्ध कौशल का ही विशेष रूप में वर्णन है। पैदल सेना दो प्रकार की थी। एक तो वो सैनिक थे जो तलवार, बरछों, बल्लभ आदि भास्त्रों से युद्ध करते थे। दूसरे वो जो इनके अलावा धनुष का भी प्रयोग करते थे। सभी प्रकार के सैनिकों में रथारोही श्रेष्ठ सैनिक थें चतुरंग सेना के अतिरिक्त सेना की विभिन्न श्रेणियाँ रामायण में उल्लेखित है। ये सैन्य श्रेणियाँ निम्नांकित है– मित्रबल, आटवीकबल, मूल बल, द्विशद बल उपयुर्क्त बलों में से द्विशद बल को छोड़कर अन्यबल ग्राह्य कहे गये है।

अयोध्या में सैन्य विभाग अलग था। अयोध्या में सैनिक भृत या योद्धा कहलाते थे। लंका और किष्किन्धा में सेना का कोई अलग विभाग नहीं था। वहाँ तो प्रत्येक पुरूष सैनिक था जिसमें कुलपुत्र ही होते थे। राजा दशरथ रावण और सुग्रीव की सेना में ऐसे ही विश्वस्थ सैनिक थे। वे अपने राष्ट्र व धर्म की रक्षा के लिए प्राणों उत्सर्ग करते थे।

वाल्मीकि रामायण में तीन प्रकार की सेना उल्लेखित है–

1. **स्थलसेनाः** पैदल, अश्वारोही, गजारोही, और रथारोही सम्मिलित थे।
2. **वायुसेनाः** रामायणानुसार आकशागामी यान भी थे, जो विमान कहलाते थे। रावण का सुप्रसिद्ध पुष्पक विमान आकाशगामी विमान था।
3. **नौ–सेनाः** रामायण में नौ सेना का संकेत मात्र हैं।

सेना की संख्या वाल्मीकि रामायण में सेना की अपरमित्ता की ओर स्पष्ट निर्देश है।

रामायणानुसार अधिक सेना या भक्ति का संचय अकारण हिंसक था। अकारण हिंसा करना व्यर्थ कहाँ गया है। एवं भास्त्रों का अकारण प्रयोग करता का पारिचयक माना गया हैं फिर भी सुरक्षा के लिए भक्ति का संचय आवश्यक माना गया। रामायण में विशाल सेना के उल्लेख से स्पष्ट है कि तत्कालीन राज्यों में सैन्य भक्ति का विशेष महत्त्व था। रामायण में सैनिक शिक्षण–विषयक पर्याप्त विवेचन है। रामायण में चर्तुरंग बल के उल्लेख से स्पष्ट है कि तत्कालीन राज्यों में सेना को उनकी योग्यतानुसार विभक्त करके शिक्षण दिया जाता था। सैनिक पैदल तथा अश्व, गज एवं रथ पर सवार होकर युद्ध कला में निष्णात कराये जाते थे। पैदल सैनिक अस्त्र–शस्त्र के बिना भी नखों, मुष्टि, जांघाओं, पदों, बाहुओं एवं दाँतो से भी युद्ध कला में दक्ष होते थे। वे कुशति करने में निपुण थे। वे वृक्ष एवं शिलाओं, मुदगल, त्रिशूल, आदि विभन्न प्रकार के भास्त्रों में भी प्रवीणता प्राप्त करते थे।

वे युद्ध में अश्वों से अश्वों की गज के द्वारा गजों की सैनिकों से सैनिक एवं रथ द्वारा रथों पर प्रहार करने शिक्षित होते थे। वे विभिन्न प्रकार के दाँव पैतरे चलाने में चतुर होते थे। वस्तुतः तत्कालीन सैनिकगण युद्ध की समान्त कलाओं में दक्षता प्राप्त करते थे।

सैनिक युद्ध में सम्बन्धित माया या छलकपट की शिक्षा भी प्राप्त करते थे। रावण ने माया की शिाक्षा रसातल में निवास कवचों से प्राप्त की थी। इसी प्रकार इन्द्र भी माया विशारद था। रामायण कालीन सैनिक न केवल अस्त्र–शस्त्र विधा में ही निष्णात थे, अपितु मशीनों को भी चलाने में निपुण थे।

रामायणनुसार नारियाँ भी सैनिक शिक्षा प्राप्त होती थी, दशरथ का शरीर जब युद्ध में जर्जरित हो गया था तो कैकयी ने उन्हें युद्ध भूमि से दूर ले जाकर उनके प्राण बचाये थे। लंका में स्त्रियों ने पहरेदारों का काम किया जो महिला सैनिक के रूप में प्रतीत होती थी। साथ ही रामायण में रथों के भी तीन प्रकार बताये गये हैं–

1. **औपवाह्यः** सवारी योग्य रथ।
2. **साँग्रामिक रथः** युद्ध क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाला रथ
3. **पुष्प रथः** उत्सवों के समय प्रयुक्त होन वाला रथ

वाल्मीकि रामायण में अनेक स्थानों पर दूत का उल्ल्लेख भी प्राप्त होता हैं, सभी प्रसंगों में ना केवल संदेशवाहक अपितु गुप्तचर के रूप में अनेक राज्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के अर्थ में भी दूत को प्रस्तुत किया गया हैं।

हनुमान व अंगद श्री राम के दूत एवं रक्षा विशेषज्ञ के रूप में कार्य करते थे। वाल्मिकी रामायण के प्रशासन के अंतर्गत दूत एवं गुप्तचरों का महत्वपूर्ण स्थान देखा गया हैं, दूत अपने स्वामी के हित साधनों के लिए दूत एवं शांतिकाल दोनों में संदेश वाहक का कार्य करते थे।

सैन्य व्यवस्था में राजा एवं अमात्य के बाद दूत का स्थान निश्चित किया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों के निर्धारण में भी दूतों का महत्वपूर्ण स्थान एवं भूमिका रही हैं। हनुमान रावण के दरबार में श्री राम का दूत बताकर स्वयं का सम्बोधन करते हुए कहते हैं– मैं भगवान श्री राम का कार्य लेकर में तुम्हारे पास आया हूँ, 'मैं अमित तेजस्वी श्री रघुनाथ जी का दूत हूँ'। हनुमान के कुछ विशेष गुणों के कारण राम ने उन्हें दूत नियुक्त किया था।

किष्कीन्धा काण्ड के एक प्रसंग के अनुसार सुग्रीव हनुमान से कहते है कि– हनुमान तुम नीतिशास्त्र के पण्डित हो। एक मात्र तुम्ही में बल, पराक्रम देशकाल का अनुसरण तथा नीतिपूर्ण व्यवहार एक साथ देखे जा सकते हैं।

जामवन्त ने भी हनुमान को श्री राम व लक्ष्मण के समान पराक्रमी माना। सुन्दर काण्ड में भी दूत एवं गुप्तचर के गुणों का वर्णन कर हनुमान एवं अंगद को सबसे योग्य दूत एवं गुप्तचर का स्थान प्रदान करते है।

वाल्मीकि रामायण में दूत के गुणों में वाणी माधुर्य, सुनने की इच्छा, ग्रहण करना, स्मरण रखना, तर्क–वितर्क, सिद्धांत निश्चित अर्थ का ज्ञान एवं तत्व को अब समझना सम्मिलित है।

दूतों की महत्वपूर्ण भूमिका देखते हुए उनकी कार्य पद्धति के अनुरूप उनके लिये विशेषाधिकार की व्यवस्था की गई थी। दूत की हत्या निषेध थी। कुछ विशेष परिस्थितियों में दूत को दण्ड भी दिया जा सकता था। दूत को अपने कार्य सिद्ध हेतु किसी भी प्रकार की नीति अपनाने की छूट थी। दूत के सन्धि कार्यों का उल्लेख भी वाल्मिकी रामायण में प्राप्त होता है, अतः हम देखते है कि वाल्मिकी रामायण में सैन्य व्यवस्था के अंतर्गत दूत का अपना महत्वपूर्ण स्थान होता था।

वह राज्य में कुटनीतिक प्रतिनिधि होता था। राजनीति और अन्तर्राज्यीय सम्बंधों में दूतकार्य का महत्वपूर्ण योगदान था जो सैन्य व्यवस्था में परमावश्यक माना गया था।

निष्कर्ष

अतः हम वाल्मीकिकृत रामायण में राम की गौरव गाथा के साथ देश की सामाजिक, राजनैतिक और सैन्य व्यवस्था का वर्णन समृद्ध रूप मे पाते हैं, किन्तु यत्र, तत्र विचारों के माध्यम से हम जान सकते है कि धर्मपालन, शक्ति व्यवस्था, सुरक्षा न्याय, दण्ड आदि राज्य के मुख्य तत्वों में से एक थे। राज्य के उच्च नैतिक मूल्यों में राज्य का स्थान महत्वपूर्ण था। जो कल्याणकारी राज्य की रूप रेखा प्रदान करता है। राजा समाज के निर्बल वर्गों की रक्षा अपन सैन्य सहयोगी के माध्यम से करता था। प्रजा कल्याण उसका परम, धर्म माना गया, वाल्मीकि रामायण इस बात का घोतक की उच्चकोटी की प्रशासन क्षमता संपन्न सैन्य व्यवस्था के आधार पर राजा के संरक्षण में प्रजा दरवाजा खोलकर निश्चित होकर अपना जीवन यापन करती थी साथ ही स्त्रियाँ भी स्वये को सुरक्षित महसूस कर सकती थी। इसका चित्रण वाल्मिकी रामायण हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

तथ्यात्मक आधारों के उपरान्त हम पाते है कि वाल्मीकिकृत रामायण महाकाव्य में सेना को राज्य के महत्वपूर्ण अंगों में से एक माना गया है। वहीं एक और कौटिल्य, कामन्दक का नीतिसार, महाभारत साथ ही अन्य अनेकों प्राचीन ग्रंथों में सैन्य महत्व देखने को मिलता है।

अतः स्पष्ट परिलक्षित होता है कि सेना से ही राज्य व राष्ट्र की रक्षा सम्भव है। प्राचीन काल से आधुनिक युग तक कोई राष्ट्र ऐसा अछूता नहीं जो अपनी सैन्य व्यवस्था ना रखता हो। सेना राज्य एवं राष्ट्र के नागरिकों को स्वतंत्र एवं निडर जीवन प्रदान करती है। साथ ही किसी भी राष्ट्र एवं राज्य का गौरव मानी जाती है। सेना के लिए आत्म–सम्मान व समर्पण कोई नई बात नहीं है। प्राचीन काल से लेकर आज तक सैन्य वीरों सम्मान राष्ट्र सदैव करता आया है। एवं युवा पीढ़ी के लिए वीर योद्धा किसी से कम नहीं होते। जिसका प्रतिविम्ब हम वर्तमान में भी आसानी से देख सकते हैं। वहीं काल एवं परिस्थितियों के आधार पर सेना का रूप परिवर्तन अवश्यमयभावी है, जो सतत् परिवर्तनशील है।

जैसे केवट के बिना नाव, सारथी के बिना रथ, वहीं स्थिति है सेना के बिना राष्ट्र, की यह शोध पत्र वाल्मीकिकृत रामायण मै वर्णित सैन्य व्यवस्था की विवेचना करता है साथ ही हमारे अतीत के सैन्य परम्परा के सैन्य अध्ययन में सहायक सिद्ध प्रतीत होता है। धर्म को विशेष मानते हुए वाल्मीकी कृत रामायण में धर्मानुसार शासन, धर्मानुसार पालन, धर्मानुसार दण्ड का उपयोग राजा महान कर्तव्य बताया गया है। इसलिये सभी युद्धों में धर्म युद्ध श्रेष्ठ है ऐसी जानकारी हमें वाल्मीकिकृत रामायण प्रदान करती है।

अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर निःसंदेह यह कहाँ जा सकता है कि हमारी प्राचीन सैन्य संगठन एवं युद्ध कला वर्तमान में भी सहायक एवं दृष्टिगोचर प्रतीत होती है।

सन्दर्भ सूची

1. रामायण कालीन राज्यादर्श – डॉ. प्रभा खरे पृ. 17/18
2. वाल्मीकिकृत–रामायण सुन्दरकाण्ड पृ. 64/65
3. वाल्मीकि कृत रामायण – युद्ध काण्ड
4. वाल्मीकिकृत रामायण – किष्किन्धा काण्ड
5. भारत का सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय
6. वाल्मीकि रामायण – युद्ध काण्ड 6/13/7 ,8, 6/21/16,17
7. वाल्मीकि रामायण– युद्ध काण्ड 5/41/2,3
8. वाल्मीकी रामायण– युद्ध काण्ड 6/11/16, 6/12/3,4
9. भीष्म का राजधर्म पृ.134
10. शुक्रनीति. 6/37/24